पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

आपको यह जानकर हैरानी होगी कि सारी सांसारिक वस्तुएं हमारी मन की शक्ति का ही परिणाम हैं। इसे शब्दों में कहूँ तो कह सकते हैं कि हम जो सोच रहे, वही बाहर घटित हो रहा! जैसे उदाहरण में आप सेहत ले लो। जो आत्मा के साथ शरीर का पूर्णतया तालमेल है।

जब तक हम खालिस(पवित्र) अंतरात्मा की आवाज़ सुनकर चलते हैं, तब तक हम सुखी रहते हैं और हमारे शरीर को कोई रोग नहीं

लगता। शारीरिक रोग वास्तव में कोई अलग चीज़ नहीं है। यह मानसिक दुर्दशा के चिन्ह हैं। जैसे ही मानसिक हालात में सुधार होता है, वैसे ही शारीरिक दशा अपने आप ठीक हो जाती है। मानसिक अवस्था का सम्बन्ध शारीरिक दुःखों के साथ है। यह इस बात से सिद्ध हो जाता है कि एक मनुष्य तो कांटे की चुभन को भी नहीं सह सकता है, जबकि दूसरा मनुष्य हँसते हुए सूली पर चढ़ जाता है। एक मनुष्य अपने किसी मित्र के मामूली से मज़ाक को भी दिल में जगह नहीं देता, जबकि लोगों की हज़ार गालियों का भी कई लोगों पर बिल्कुल असर नहीं होता। आप ज़रा यह सोचिए कि किसी की मौत पर कोई 10 दिन आँसू बहाता है, जबकि दूसरा अपने रिश्तेदारों के मरने पर भी नहीं रोता है। इसका अर्थ यह हुआ कि दुःख व सुख हमारे हाथ में है। यहाँ पर हमें मन को बताना पड़ेगा, चेतना के साथ, कॉन्शियसनेस के साथ,

मन की चैतन्यता को महसूस करना, उसकी शक्ति का एहसास बहुत आसान है। लेकिन हमने ध्यान नहीं दिया, जिसके कारण आज हर चीज़ या तो बहुत कठिन लगती है, या बहुत आसान लगती है। मनुष्य की नेचर नैचुरल है, उसमें शक्ति है, परंतु आज डर, अवसाद के अधीन होकर वह गलतियाँ करता है।

अवेयरनेस के साथ, कि आप आत्मा हो, आप अजर हो, आपके पास यहाँ कोई भी मरा नहीं है, सभी ने शरीर छोड़ा है। यह शक्ति है, आत्मा की।

जापान में किसी डॉक्टर के पास एक मरीज आया, और कहता है कि किसी ने डायग्नोज़ किया कि उसके गले में सूजन है, वो थोड़े दिन में कैंसर का रूप ले लेगा और वह मर जायेगा। जापानी डॉक्टर ने मन की अद्भुत शक्ति का प्रयोग किया। उसने उसके गले पर हाथ लगाकर बड़े ही आत्मविश्वास के साथ बोला, किस बेवकूफ ने कह दिया कि आपके गले में कैंसर है! यह फोड़ा है, जो कुछ दिन में बड़ा होकर फूट जायेगा। इतने आत्मविश्वास की बात सुनकर मरीज बिल्कुल ही खुश हो गया, और थोड़े दिन में ऐसा ही हुआ कि वो ठीक हो गया। यहाँ पर बात है कि सब कुछ आपके मन का ही खेल है। आज हमारा मन इतना कमज़ोर है कि कुछ भी मान लेता है, और उस सोच का वैसा ही उसके शरीर पर उसका असर होता है।

आज वहम के कारण लोग हार्ट के पेशेन्ट हैं। उनका रोग मानसिक है। अगर ई.सी.जी. कराया, उसमें थोड़ा भी कुछ निकला, सारे दुःखी! इसका इलाज आपके मन में है, ना कि अंतर्मन में। इसलिए कि मन जब सोये हुए या बिना अवेयरनेस के कोई भी बात सुनता है, तो उसे हम बिना रजिस्टर किये छोड़ देते हैं। फिर वह अंतर्मन में जाकर, या सब-कॉन्शियस में जाकर बैठ जाता है। लेकिन जैसे ही हम जाग जाएं, तो कोई भी बीमारी के, डिप्रेशन के, तनाव के विचारों को अपने अंदर जाने ही नहीं देंगे, और यही चीज़ हमें करनी है। अपने मन की शक्ति को जगाना है। चलो हो सकता है थोड़ा टाइम लगे, लेकिन बार-बार मन को यही बात देना है कि मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। ठीक हूँ। हम स्वस्थ ही थे आदि। थोड़ी सी जागृति लाओ, यह जागृति ही हमारे जीवन को पूरी तरह से बदलने के लिए एक अचूक हथियार साबित होगी।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-9-2016

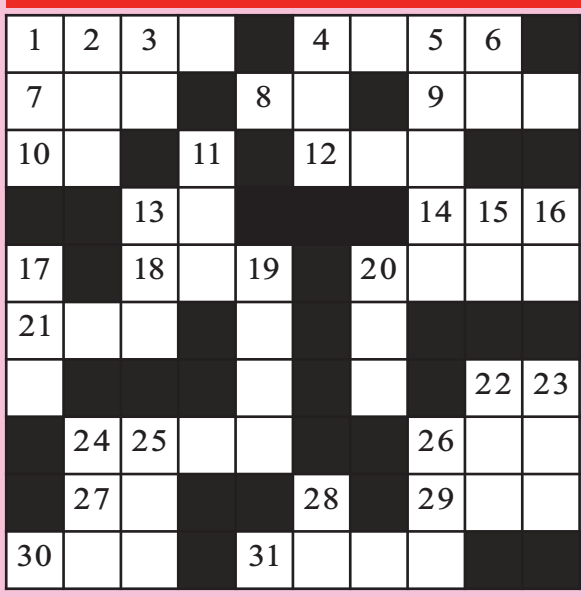

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. गूथना, धागा डालना (3)
2. देखना, टकटकी लगाकर देखना (3)
3. तुम्हें कभी किसी को....नहीं करना है, सबको बाप का परिचय ज़रूर देना है, इन्कार (2)
4. किसी भी देहधारी से....नहीं रखना है (3)
5. बाबा का एक नाम, नैया को तारने वाला (5)
6. स्वाद, जलीय अंश (2)
11. बाप की बहुत-बहुत....रखनी है, इज़्ज़त (3)
13. ....बाप से तुम्हें हद का वर्सा मिलता है (3)
15. प्रीति, प्रेम, मनोयोग से लगा हुआ, आसक्त (2)
16. कमल, घोड़े की खुर में लगने वाला अर्द्धचंद्राकार लोहा (2)
17. पैर, पग, कदम (3)
19. कर्म करने वाले, नौकर (4)
20. करने योग्य, करणीय (3)
22. ओ बाबा आपने....कर दिया, जादूगरी (3)
23. खन-खन, धातुओं के टकराने से उत्पन्न आवाज़ (3)
24. नीच, बदमाश, पापी (3)
25. लानत, भर्त्सना (3)
26. समतल, जो उबड़ खाबड़ न हो (3)
28. संसार, दुनिया, जगत (2)

बायें से दायें

1. पिता का पिता, दादाजी (4)
4. अनवरत, निरंतर (4)
7. मना करना अवरोध उत्पन्न करना (3)
8. वस्त्र विहीन, एक साधु समाज (2)
9. जीभ, जिह्वा (3)
10. माता का पिता, विभिन्न (2)
12. भार, बोझ, तौल (3)
13. हठ, दुराग्रह (2)
14. पराजित होना, असफल होना (3)
18. याद दिलाने वाला, यादगार (3)
20. हथेली, ताली (4)
21. निशा, रात्रि, रात (3)
22. ....का चोर सो लख का चोर (2)
24. हकदार, वारिस (4)
26. मधुबन निवासी अर्थात् सदा मधु के....मीठे (3)
27. धकेलने के पीछे किया जाने वाला आघात (2)
29. पालना करने वाला, पालनहार (3)
30. आत्मा अजर....अविनाशी है (3)
31. सिगार, चुरूट, कागज के रोल में तम्बाकू भरकर बनाई गई बत्ती (4)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन।

वुटवल-नेपाल। उप-प्रधान एवं अर्थमंत्री माननीय कृष्णबहादुर महरा जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नारायण।

उदयपुर-राज.। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए कर्नल डॉ. सती, डॉ. रश्मि बोहरा,अध्यक्ष,उदयपुर संभाग,वर्धमान कोटा ओपन यूनिवर्सिटी, व्यवसायिक गण, ब्र.कु. रीटा, ब्र.कु. पदम,माउण्ट आबू तथा अन्य।

वाराणसी-उ.प्र.। ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी,सबज़ोन इंचार्ज,ब्रह्माकुमारीज़ को सम्मानित करते हुए बनारस हिन्दु यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर। साथ हैं ब्र.कु. दीपेन्द्र तथा अन्य।

वाढ़-विहार। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् चित्र में एन.टी.पी.सी. के ए.जी.एम. विश्वजीत भाई, बादल भाई, ब्र.कु. ज्योति तथा ब्र.कु. संगीता।

कादमा-हरियाणा। भाई दूज के अवसर पर किसान क्लब निहालगढ़ द्वारा आयोजित बेटी मिलन समारोह में उपस्थित हैं यदुवंशी शिक्षण संस्थाओं के चेयरमैन व पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह, सरपंच सुमन बहन, ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. वसुधा तथा अन्य।

मोतिहारी-विहार। दीपावली के अवसर पर नगर के हेनरी बाज़ार सेवाकेन्द्र पर लक्ष्मी की चैतन्य झाँकी के साथ ब्र.कु. मीणा की विधिवत आरती उतारते हुए वहाँ की बहनें एवं मातायें।